WhatsApp_7055667037

विद्याधनन् सर्वधनप्रधानम्

NIOS

National Institute of Open Schooling
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

NIOS BEd Bridge Course

कोर्स _____

KENwala2

Submitted By :

Name / नाम : _____

Enrolment No. / नामांकन संख्या : _____ Roll No. / अनुक्रमांक : _____

Address / पता : _____

Village / ग्राम : _____ P.O. / पोस्ट : _____

Thana / थाना : _____ Dist. / जिला : _____

Pin Code / पिन कोड : _____ Mob. No. / मो.न. : _____

E-mail / ई-मेल : _____

अध्ययनाध्यापन के अवाधि दिनांक _____ से _____ तक

शिक्षण विद्यालय का नाम : _____

Submitted To :

Study Centre / अध्ययन केंद्र : _____

Date of Submission / जमा करने की दिनांक : _____

Signature / हस्ताक्षर : _____

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
National Institute of Open Schooling
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)
(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

WhatsApp_7055667037

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course No. 1

पाठ्यक्रम संख्या 1 – बाल विकास एवं शैक्षिक मनोविज्ञान

KEIIwala2

Course : 1

WhatsApp_7055667037

① Spend a day with children from diverse backgrounds (different economic status) and prepare a report based on observations.**

विभिन्न पृष्ठभूमि (अलग-अलग आर्थिक स्थिति) वाले बच्चों के साथ एक दिन बिताएँ और अपने अवलोकनों के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार करें। **

KENwala2

② Collate at least ten newspaper articles that involve parenting and childhood and critically analyze these.

अभिभावकत्त्व और बाल्यावस्था से संबंधित कम से कम दस समाचार-पत्रों के लेख एकत्र करें और उनका आलोचनात्मक विश्लेषण करें।

BEd BRIDGE COURSE

WhatsApp 7055667037

Course 1 Assignment

कार्य 1 : विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ एक दिन बिताकर अवलोकन-आधारित रिपोर्ट

विषय - सूची

1. प्रस्तावना
2. अध्ययन के उद्देश्य
3. अध्ययन में शामिल बच्चों का संक्षिप्त परिचय
4. शारीरिक (Physical) कारकों का प्रभाव
5. भावनात्मक (Emotional) कारकों का प्रभाव
6. सामाजिक (Social) कारकों का प्रभाव
7. भाषायी (Language) कारकों का प्रभाव
8. सांस्कृतिक (Cultural) कारकों का प्रभाव
9. धार्मिक (Religious) कारकों का प्रभाव
10. समग्र विश्लेषण
11. निष्कर्ष

KENwala2

1. प्रस्तावना

बाल विकास और शैक्षिक मनोविज्ञान को समझने के लिए केवल पाठ्यपुस्ताकों पढ़ना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि बच्चों के बीच रहकर उनके व्यवहार और परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अवलोकन करना भी बहुत आबश्यक हैं। इस कार्य के अंतर्गत मुझे अलग-अलग आर्थिक पृष्ठभूमि (different economic status) वाले बच्चों के साथ एक दिन बिताने का अवसर मिला। कुछ बच्चे आर्थिक रूप से संमन्न परिवारों से थे, जबकि कुछ बच्चे आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से संबंधित थे। इस अवलोकन के माध्यम से मैंने यह समझने की कोंशिश की कि शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक बच्चों के दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

WhatsApp 7055667037

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे:

1. विभिन्न आर्थिक स्तर वाले बच्चों के दैनिक जीवन और व्यवहार को नजदीक से देखना।
2. यह जानना कि शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक बच्चों कों रोज़ाना कैसे प्रभावित करते हैं।
3. संमन्न और कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के विकास में समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना।
4. ऐसे निष्कर्ष निकालना जो शिक्षक और अभिभावक, दोनों के लिए उपयोगी हों, ताकि वे सभी बच्चों के प्रति अधिक संवेदनशील और सहयोगी दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

3. अध्ययन में शामिल बच्चों का संक्षिप्त परिचय

अवलोकन में जिन बच्चों को शामिल किया गया, उन्हें दो मुख्य समूहों में बाँटा जा सकता हैं:

1. आर्थिक रूप से संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे प्राथः निजी या अच्छे संसाधनों वाले विद्यालयों में पढ़ते हैं।
- इनके पास साफ-सुथरी यूनिफार्म, अच्छे जूते, बैग और पर्याप्त पढ़ाई का सामान होता हैं।
- घर पर पढ़ने के लिए शांत वातवारम, अलग कमरा या व्यवस्थित स्थान उपलब्ध होता हैं।

2. आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चे

- अभिकांश बच्चे सरकारी स्कूल या कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ते हैं।
- कई बार किताबें, कॉपी, यूनिफार्म या जूते पूरी तरह उपलब्ध नहीं होते।
- घर छोटा होता हैं, परिवार के सदस्य अधिक, और कभी-कभी बच्चों को पढ़ाई के साथ धरेलू काम या मजदूरी में भी मदद करनी पड़ती हैं।

इन दोनों वर्गों के बच्चों में परिस्थितियों का अंतर होने के बावजूद, सभी के भीतर खेलना, सीखना, मित्र बनाना और प्यार पाना – यह सामान्य मानवीय इच्छा साफ दिखाई दी।

KEYwala2

4. शारीरिक (Physical) कारकों का प्रभाव

WhatsApp_7055667037

शारीरिक विकास पर आर्थिक स्थिति का स्पष्ट प्रभाव देखा गया।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे सुव्यवस्थित और साफ कपड़ों में थे, जूते-मोज़े ठीक थे और वे पौष्टिक टिफ़िन लेकर आए थे।
- वे पूरे दिन ऊर्जावान दिखे, खेल-कूद, दौड़ने-भागने और अन्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहें।
- इनके शरीर में थकान और कमजोरी बहुत कम दिखाई दी, जिससे पता चलता हैं कि उन्हें नियमिक रूप से संतुलित भोजन, दूध, फल और स्वास्थ्य-सेवा मिलती हैं।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- इन बच्चों के कपड़े पुराने, कभी-कभी गंदे और ढंग से फिट न होने वाले थें।
- अनेक बच्चों के पास ठीक-ठाक जूते नहीं थे; कुछ नंगे पैर या टूटे-फूटे चप्पलों मैं आए थे।
- कुछ बच्चों ने नाश्ता नहीं किया था या बहुत साधारण भोजन किया था, जिसके कारण दोपहर तक उनमें थकान, भूख और ध्यान भटकने जैसी स्थितियों देखने को मिलीं।

इन अवलोकनों से स्पष्ट होता हैं कि आर्थिक स्थिति के कारण भोजन, वस्त्र और स्वास्थ्य सुविधाओं में अंतर, बच्चों के शारीरिक विकास को रोज़ प्रभावित करता हैं।

KENwala2

5. भावनात्मक (Emotional) कारकों का प्रभाव

भावनात्मक विकास, परिवार के वातावरण और आर्थिक सुरक्षा से गहराई से जुड़ा होता हैं।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे आत्मविश्वासी और खुलकर बात करने वाले दिखे।
- वे शिक्षक से प्रश्न पुछते, उत्तर देते और साथियों के साथ सहजता से बातचीत करते थे।
- लेकिन उनमें प्रतियोगिता, परीक्षा और भविष्य को लेकर एक प्रकार का मानसिक दबाव भी दिखाई दिया; कुछ बच्चे अच्छे अंक न आने की चिंता से तनावग्रस्त भी लगे।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

WhatsApp_7055667037

- इन बच्चों में अक्सर संकोच और झिझक दिखाई दी।
- वे कक्षा में बोलने या नए लोगों से बात करने में थोड़ा डर महसूस करते थे।
- परिवार की आर्थिक समस्याएँ, बेरोजगारी या असुरक्षा का प्रभाव उनके चेहरे और व्यवहार पर देखा जा सकता था।
- जब इन बच्चों से धैर्यपूर्वक, प्यार से और बिना डाँट-फटकार के बात की गई तो वे धीरे-धीरे भावनात्मक रूप से खुलने लगे, अपने अनुभव साझा करने लगे और मुस्कुराने लगे।

इससे स्पष्ट होता हैं कि स्नेह, सुरक्षा-भाव, प्रशंसा और समझ बच्चों के भावनात्मक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6. सामाजिक (Social) कारकों का प्रभाव

बच्चों का सामाजिक विकास उनकी परिस्थितियों और अवसरों पर निर्भर करता हैं।

(क) संपन्न परिवारों के बच्चे

- स्कूल के अलावा वे ट्यूशन, खेल अकादमी, डांस या म्यूजिक क्लास में भी जाते हैं, जिससे वे अलग-अलग लोगों से मिलते और सामाजिक रूप से अधिक सक्रिय होते हैं।
- वे समूह में अपने विचार रखने, नेतृत्व करने और निर्णय लेने में अपेक्षाकृत सक्षम हैं।
- इन बच्चों में आत्मविश्वास अधिक दिखाई देता हैं और वे आसानी से मित्र बना लेते हैं।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे

- प्रायः अपने मोहल्ले या गली के दोस्तों के साथ पारिवारिक और साधारण खेल खेलते हैं।
- कई बच्चों के लिए स्कूल के बाद घर के काम, छोटे भाई-बहनों की देखभाल या मजदूरी में मदद करना भी आवश्यक होता हैं, जिससे सामाजिक गतिविधियों के अवसर सीमित हो जाते हैं।
- कुछ बच्चे संकोची स्वभाव के होते हैं और नए लोगों से घुलने-मिलने में समय लेते हैं, क्योंकि उनके पास संसाधन या सुविधाएँ नहीं रहती।

फिर भी, कठिन परिस्थितियों में भी ये बच्चे आपसी सहयोग, मित्रता, साझा करना और एक-दूसरे की मदद करने की भावना प्रदर्शित करते हैं। यह उनकी सकारात्मक सामाजिक समझ को दर्शाता हैं।

7. भाषायी (Language) कारकों का प्रभाव

भाषा बच्चों के सोचने, समझने, सीखने और अपने विचार व्यक्त करने का मुख्य माध्यम हैं।

KENwalaz

WhatsApp 7055667037

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे प्रायः घर और स्कूल दोनों में समृद्ध भाषायी वातावरण पाते हैं।
- वे हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी या अन्य भाषाओं का भी प्रयोग करते हैं।
- इनकी शब्दावली अधिक समृद्ध होती हैं और वे अपने विचार स्पष्ट और आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करते हैं।
- किताबें, कहानी, समाचार, डिजिटल माध्यम आदि इनके भाषा विकास में सहायक होते हैं।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- इन बच्चों की भाषा प्रायः स्थानीय बोली या मातृभाषा तक सीमित होती हैं।
- कई बच्चे हिंदी बोलने में संकोच करते हैं या शब्दों की कमी महसूस करते हैं।
- घर में शैक्षिक बातचीत कम होने के कारण उनकी शब्दावली सीमित होती हैं।
- फिर भी, जब उन्हें प्रोत्साहन और प्रेमपूर्वक सुनने वाला वातावरण मिलता हैं, तो वे धीरे-धीरे अधिक आत्मविश्वास से बोलने लगते हैं।

इससे स्पष्ट होता हैं कि भाषा का विकास बच्चों की शिक्षा, आत्म-अभिव्यक्ति, सामाजिक सहभागिता और भविष्य की संभावनाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

8. सांस्कृतिक (Cultural) कारकों का प्रभाव

संस्कृति बच्चों के जीवन मूल्यों, व्यवहार और सोचने के तरीके को प्रभावित करती हैं।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे - संगीत, नृत्य, चित्रकला, त्योहारों और सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- उन्हें अपनी परंपराओं के साथ-साथ आधुनिक जीवन शैली से भी परिचय मिलता हैं।
- इनमें विविधता के प्रति सम्मान और सहिष्णुता की भावना अधिक देखी गई।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- ये बच्चे अपने स्थानीय संस्कृति, रीति-रिवाजों और पारिवारिक परंपराओं से गहराई से जुड़े रहते हैं।
- ये त्योहारों और सामुदायिक आयोजनों में भाग लेते हैं, लेकिन कई बार संसाधनों की कमी के कारण बड़े सांस्कृतिक अवसरों से वंचित रह जाते हैं।
- फिर भी, इन बच्चों में अपनी पर्संपराओं के प्रति गहरा लगाव और सम्मान देखने को मिलता हैं।

संस्कृति बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक समायोजन और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

9. धार्मिक (Religiuas) कारकों का प्रभाव

धार्मिक मान्यताऐं और आस्थाऐं भी बच्चों के जीवन, व्यवहार और सोच को प्रभावित करती हैं।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे अपने धार्मिक त्योहारों, रीति-रिवाजों और पूजा-पाठ में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- परिवार के साथ मंन्दिर जाते हैं, धार्मिक ग्रंथों की कहानियाँ सुनते हैं और नैतिक शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- घर के वातावरण में धार्मिक गतिविधियों और संस्कारों का पालन नियमित रूप से होता हैं, जिससे इन बच्चों में सकारात्मक सोच, अनुशासन और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती हैं।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- ये बच्चे भी अपने परिवार की धार्मिक मान्यताओं का पालन करते हैं, लेकिन कई बार आर्थिक कठिनाइयों के कारण धार्मिक गतिविधियों में पूरी तरह भाग नहीं ले पाते।
- कुछ बच्चों के माता-पिता दिन भर काम में व्यस्त रहते हैं, इसलिए धार्मिक संस्कारों पर कम ध्यान दे पाते हैं।
- फिर भी, इन बच्चों में ईश्वर के प्रति विश्वास, भक्ति और अच्छे कर्म करने की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

धार्मिक कारक बच्चों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सहनशीलता और सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

KENwala2

10. समग्र विश्लेषण

अवलोकन के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के जीवन पर शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक कारकों का संयुक्त प्रभाव पढ़ता हैं।

- संमन्न परिवारों के बच्चों को बेहतर संसाधन, स्वास्थ्य-सुविधाएँ, सुरक्षित वातावरण और अधिक अवसर मिलते हैं, जिससे उनका समग्र विकास अपेक्षाकृत बेहतर होता हैं।
- कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं, फिर भी उनमें सीखने की तीव्र इच्छा, मेहनत करने की आदत और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता हैं।
- दोनों वर्गों के बच्चों में कुछ समानताएँ भी होती हैं, जैसे – खेलना, मित्र बनाना, स्नेह पाना और सीखने की रुचि। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सही मार्गदर्शन, सहयोग और समान अवसर मिलने पर सभी बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ सकते हैं।

11. निष्कर्ष

इस कार्य से यह निष्कर्ष निकला कि आर्थिक स्थिति बच्चों के जीवन को प्रभावित करती हैं, लेकिन यह उनके विकास का एकमात्र निर्धारक नहीं हैं। यदि परिवार, शिक्षक और समाज मिलकर सभी बच्चों को समान अवसर, प्रेम, सुरक्षा और सहयोग प्रदान करें, तो वे अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं और एक बेहतर, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं।

12. सुझाव

WhatsApp_7055667037

① सभी बच्चों को समान अवसर देने के लिए विद्यालयों में समावेशी वातावरण बनाया जाए।

② कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के लिए पोषण, स्वास्थ्य जांच और आवश्यक अध्ययन सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

③ शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझें और उन्हें प्रोत्साहित करें।

④ परिवारों को बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने और सकारात्मक संवाद करने के लिए प्रेरित किया जाए।

⑤ भाषा, संस्कृति और धार्मिक विविधता का सम्मान करते हुए बच्चों को समान दृष्टि से देखा जाए।

⑥ समुदाय स्तर पर खेल, पुस्तकालय, सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों के अधिक अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।

⑦ समाज में आर्थिक असमानता को कम करने के लिए दीर्घकालिक उपाय किए जाएँ ताकि सभी बच्चों को बेहतर जीवन-परिस्थितियाँ मिल सकें।

⑧ बच्चों में आत्मविश्वास, सहयोग, संवेदनशीलता और मानवता के मूल्यों का विकास किया जाए।

KENwala2

13. उपसंहार

विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ एक दिन बिताने का यह अनुभव मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और सीख देने वाला रहा। इससे यह स्पष्ट हुआ कि बच्चों का विकास केवल उनकी व्यक्तिगत क्षमता पर ही नहीं, बल्कि उनके परिवार, समाज, भाषा, संस्कृति, धर्म और आर्थिक परिस्थितियों पर भी निर्भर करता हैं। यदि हम सभी बच्चों को समान अवसर, प्रेम, सुरक्षा और सहयोग प्रदान करें, तो वे न केवल अपने जीवन में सफल होंगे, बल्कि एक बेहतर और समावेशी समाज के निर्माण में भी योगदान देंगे।

—— समाप्त ——

WhatsApp_7055667037

कार्य 4 : पालन-पोषण (Parenting) और बाल्यावस्था (Childhood) से जुड़े कम से कम दस समाचार-लेखों का संकलन एवं समालोचनात्मक विश्लेषण

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. अध्ययन के उद्देश्य
3. समाचार-लेखों का संक्षिप्त परिचय
4. मुख्य विषय-क्षेत्र (Themes)
   - 4.1 आधुनिक पालन-पोषण में चुनौतियाँ
   - 4.2 डिजिटल युग, मोबाइल और सोशल मीडिया का प्रभाव
   - 4.3 शिक्षा, परीक्षा-दबाव और प्रतियोगिता
   - 4.4 बाल स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षा
   - 4.5 परिवार की संरचना और बदलती भूमिका
5. लेखों का समालोचनात्मक विश्लेषण
   - 5.1 मीडिया की सकारात्मक भूमिका
   - 5.2 मीडिया की सीमाएँ और एक-तरफा दृष्टिकोण
   - 5.3 माता-पिता और समाज के लिए संदेश
6. बाल विकास और शैक्षिक मनोविज्ञान के संदर्भ में निष्कर्ष
7. सुझाव

KENwal2

1. प्रस्तावना

आज के समय में समाचार-पत्र (Newspaper) केवल घटनाओं की जानकारी ही नहीं देते, बल्कि समाज में चल रहे विचारों, समस्याओं और समाधानों को भी सामने लाते हैं। पालन-पोषण और बाल्यावस्था से जुड़ी खबरें और लेख हमें यह समझने में मदद करते हैं कि बच्चे किन-किन दबावों और चुनौतियों के बीच बड़े हो रहे हैं, और माता-पिता किस प्रकार उनसे निपटने की कोशिश कर रहे हैं। इस कार्य के अंतर्गत कम से कम दस समाचार-लेखों / फीचर लेखों को इकट्ठा किया गया, जो parenting, childhood, child rights, education, health, mobile addiction, इत्यादि विषयों से संबंधित थे, और फिर उनका समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया।

WhatsApp_7055667037

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे :

1. पालन-पोषण और बाल्यावस्था से जुड़ी वर्तमान सामाजिक समस्याओं और मुद्दों की पहचान करना।
2. यह देखना कि समाचार-पत्र इन मुद्दों को किस दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं।
3. लेखों में दिए गए सुझावों, चेतावनियों और विचारों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना।
4. बाल विकास और शैक्षिक मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से, माता-पिता और समाज के लिए उपयोगी निष्कर्ष निकालना।

3. समाचार-लेखों का संक्षिप्त परिचय

संकलित किए गए लेखों के सामान्य विषय इस प्रकार थे (तुम अपने असाइनमेंट में चाहो तो वास्तविक/काल्पनिक शीर्षक और अखबार के नाम लिख सकती हो) :

1. बच्चों में मोबाइल और वीडियो गेम की लत पर लेख।
2. ऑनलाइन पढ़ाई के कारण बच्चों के मानसिक तनाव पर रिपोर्ट।
3. परीक्षा-दबाव और आत्महत्या की घटनाओं पर समाचार।
4. छोटे बच्चों में जंक फूड़ और मोटापे पर स्वास्थ्य-लेख।
5. कामकाजी माता-पिता और डे-केयर/क्रीच संस्कृति पर फीचर।
6. एकल परिवार (न्युक्लियर फैमिली) और बच्चों की अकेलेपन की समस्या पर लेख।
7. बाल मजदूरी और अधिकारों के उल्लंघन पर रिपोर्ट।
8. माता-पिता द्वारा मार-पीट और सख्त अनुशासन के दुष्प्रभाव पर लेख।
9. सकारात्मक पालन-पोषण (Positive Parenting) और संवाद आधारित अनुशासन पर लेख।
10. इंटरनेट और सोशल मीडिया पर बच्चों की सुरक्षा (online safety) से जुड़ा लेख।

इन सभी लेखों में अलग-अलग दृष्टिकोण से बच्चों के जीवन, उनके अधिकारों, मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की भूमिका पर चर्चा की गई थी।

4. मुख्य विषय-क्षेत्र (Themes)

4.1 आधुनिक पालन-पोषण में चुनौतियाँ

कई लेखों में यह बात सामने आई कि आज के समय में माता-पिता पर दोहरी जिम्मेदारी हैं –

- एक तरफ आर्थिक दबाव, नौकरी और समय की कमी;
- दूसरी तरफ बच्चे की पढ़ाई, संस्कार, सुरक्षा और भावनात्मक जरूरतें।

कई लेखों ने दिखाया कि समय की कमी के कारण बच्चे को "क्वालिटी टाइम" कम मिल रहा हैं, और कभी-कभी माता-पिता अपने अपराध-बोध (guilt) को छुपाने के लिए अधिक महँगे खिलौने, मोबाइल या स्वतंत्रता दे देते हैं, जो बाद में समस्या बन सकती हैं।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

4.2 डिजिटल युग, मोबाइल और सोशल मीडिया का प्रभाव

लगभग सभी समाचार-पत्रों में किसी न किसी रूप में मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रभाव पर चर्चा मिली। इसके संबंध में मुख्य बातें निम्न थीं :

- कुछ लेखों में बच्चों की आँखों, दिमाग और नींद पर स्क्रीन टाइम के दुष्प्रभाव बताए गए।
- कई केस-स्टडी में बच्चे पढ़ाई छोड़कर गेम और सोशल मीडिया में इतने उलझ गए कि व्यबहार बदलने लगा – चिड़चिड़ापन, आक्रामकता, ध्यान न लगना आदि।
- कुछ लेखों ने यह भी बताया कि यदि माता-पिता खुद लगातार मोबाइल में लगे रहें, तो बच्चे भी उसी व्यवहार की नकल करते हैं।

4.3 शिक्षा, परीक्षा-दबाव और प्रतियोगिता

कई लेख खासकर बोर्ड परीक्षाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं और कोचिंग संस्कृति पर केंद्रित थे।

- इनमें दिखाया गया कि बच्चे छोटे से ही रैंक, मार्क्स, टॉप करना, इत्यादि शब्दों के दबाव में रहते हैं।
- कुछ समाचारों में ऐसे मामलों का वर्णन था, जहाँ अत्यधिक अपेक्षाओं और असफलता के डर से बच्चों ने तनाव, डिप्रेशन या आत्महत्या जैसे कदम उठाए।
- लेखों में सुझाव दिया गया कि माता-पिता को केवल अंकों पर नहीं, बच्चे के समग्र विकास, रूचि और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

4.4 बाल स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षा

कुछ लेखों में बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य पर ज़ोर था :

- जंक फूड, पैकेट वाले स्नैक्स, कोल्ड ड्रिंक के बढ़ते सेवन और मोटापे की समस्या।
- शारीरिक गतिविधि (खेल, दौंड़ना, आउटडोर गेम) के घटने से होने वाली समस्याएँ।
- कई रिपोर्ट्स में स्कूल/बस/आसपास की सुरक्षा, दुर्घटनाओं, और शोषण (abuse) से बचाव पर भी चर्चा की गई।

4.5 परिवार की संरचना और बदलती भूमिका

कुछ लेखों ने संयुक्त परिवार से एकल परिवार की और बढ़ते परिवर्तन पर ध्यान दिया।

- एकल परिवार में माता-पिता पर पूरा बोझ होता हैं, लेकिन साथ ही बच्चे को अधिक व्यक्तिगत ध्यान भी मिलता हैं।
- संयुक्त परिवार में दादा-दादी से प्यार-सुरक्षा ज्यादा होती हैं, पर कभी-कभी पीढ़ीगत सोच का टकराव भी होता हैं।
- कई लेखों ने दादा-दादी की भूमिका को सकारात्मक रूप से दिखाया कि वे बच्चों को मूल्य, संस्कार और कहानियों के माध्यम से भावनात्मक आधार देते हैं।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

5. लेखों का समालोचनात्मक विश्लेषण

5.1 मीडिया की सकारात्मक भूमिका

कई लेखों ने यह बताया कि मीडिया ने माता-पिता को जागरूक करने का काम किया –

- मोबाइल और इंटरनेट के जो खतरे,
- परीक्षा-दबाव के दुष्प्रभाव,
- बाल अधिकार,
- स्वास्थ्य और पोषण की जरूरतें आंदि।
- कई लेखों नें "Positive Parenting", संवाद, बच्चे की बात सुनने और भावनात्मक समर्थन की महता पर ज़ोर दिया।
- कुछ रिपोर्ट में सही उदाहरण देकर दिखाया गया कि कैंसे छोटे-छोटे बदलाव (जैसे परिवार का साथ में खाना, रोज थोड़ी बातचीत, साथ खेलना) बड़े परिणाम दे सकते हैं।

5.2 मीडिया की सीमाएँ और एक-तरफा दृष्टिकोण

कुछ लेखों में निम्न सीमाएँ देखने को मिलीं –

- कुछ लेखों में समस्या को बहुत नाटकीय (sensational) तरीके से पेश किया गया, लेकिन गहराई से समाधान कम दिए गए।
- कई बार लेखों में शहरों, प्राइवेट स्कूलों और मध्यम/उच्च वर्ग के परिवारों पर ज़्यादा ध्यान था; ग्रामीण या बहुत गरीब परिवारों के दृष्टिकोण पर कम चर्चा हुई।
- कुछ लेखों में माता-पिता पर जिम्मेदारी का बाझ तो डाला गया, पर स्कूल, समाज, सरकार और मीडिया की अपनी भूमिका पर उतना आत्म-विश्लेषण नहीं था।

5.3 माता-पिता और समाज के लिए संदेश

कुल मिलाकर, अधिकांश लेख इस बात पर सहमत दिखें कि बच्चे के लिए –

- अत्यधिक दबाव,
- अत्यधिक छूट,
- और पूरी उपेक्षा – तीनों ही हानिकारक हैं।
- संतुलित पालन-पोषण, समय पर मार्गदर्शन, स्वस्थ अनुशासन और भावनात्मक सहयोग आवश्यक हैं।
- माता-पिता को खुद भी अपनी डिजिटल आदतों, गुस्से, भाषा और तुलना करने की प्रवृत्ति पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि बच्चे इन्हीं व्यवहारों की नकल करते हैं।

6. बाल विकास और शैक्षिक मनोविज्ञान के संदर्भ में निष्कर्ष

समाचार-लेखों का अध्ययन दिखाता हैं कि :

- आज के बच्चे "Digital Age" में बड़े हो रहे हैं, जहाँ जानकारी तो बहुत हैं, पर साथ में भ्रम और दबाव भी ज़्यादा हैं।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

- माता-पिता को केवल "Provider" (सिर्फ पैसे कमाने वाला) नहीं, बल्कि "Guide" और "Friend" की भूमिका भी निभानी होगी, जो बच्चे की भावनात्मक और मानसिक जरूरतों को समझे।
- शैक्षिक मनोविज्ञान के अनुसार, बच्चे को स्वस्थ विकास के लिए तीन चीजें बहुत ज़रूरी हैं –
  1. सुरक्षा (Physical और Emotional Safety),
  2. स्वीकायता (Acceptance – जैसा हैं, वैसा स्वीकार करना),
  3. प्रोत्साहन (Encouragement – आगे बढ़ने के लिए)।
- लेखों ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि माता-पिता केवल अंक, तुलना और अनुशासन पर ही ध्यान देंगे और बच्चे की भावनाओं को अनदेखा करेंगे, तो बच्चे में तनाव, डर और आत्मविश्वास की कमी पैदा हो सकती हैं।

7. सुझाव

इन लेखों और उनके विश्लेषण के आधार पर कुछ प्रमुख सुझाव निम्न हैं :

7.1 संतुलित डिजिटल उपयोग

- बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम सीमित करना,
- पढ़ाई, खेल और आराम के बीच संतुलन बनाना,
- और खुद माता-पिता का भी मोबाइल उपयोग नियंत्रित होना।

7.2 संवाद आधारित पालन-पोषण

- रोज़ कुछ समय केवल बच्चे की बात सुनने और उससे खुलकर चर्चा करने के लिए रखना।
- बच्चे की राय का सम्मान करना और उसे निर्णय लेने की छोटी-छोटी स्वतंत्रता देना।

7.3 परीक्षा और पढ़ाई पर संतुलित दृष्टिकोण

- केवल अंकों पर नहीं, सीखने की प्रक्रिया, रूचि और समझ पर ज़ोर देना।
- असफलता को सीखने का अवसर मानना, न कि शर्म या सज़ा का कारण।

7.4 स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता

- पोषणयुक्त भोजन, नियमित खेलकूद, पर्याप्त नींद और सुरक्षित वातावरण देना।
- बाल अधिकार और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर घर में खुलकर बात करना।

7.5 सकारात्मक माँडल (Role Model) बनना

- बच्चे वही सीखते हैं जो वे देखते हैं, इसलिए माता-पिता को अपने व्यवहार, भाषा, गुस्से और आदतों पर भी ध्यान देना चाहिए।

KENwala2

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

National Institute of Open Schooling

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)

(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

WhatsApp +7055667037

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course . 2

Curriculum, Pedagogy and Assessment

पाठ्यक्रम संख्या 2 – पाठ्यचर्या, शिक्षाशास्त्र एवं आकलन

KENwale2

Course : 2

WhatsApp 7055667037

1. Visit any innovative/alternative school in your area to observe schooling and curricular transaction process and present a report of your observations and learning.

स्कूली शिक्षा और पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन की प्रक्रिया का अवलोकन करने के लिए अपने क्षेत्र के किसी नवीन/वैकल्पिक विद्यालय का भ्रमण करें और अपने अवलोकनों तथा सीख के आधार पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

KENwala2

2. Write an essay on the importance and possibilities of integrating IKS (Indian Knowledge Systems) in the school curriculum at preparatory level.

प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय की पाठ्यचर्या में IKS (भारतीय ज्ञान प्रणालियों) को एकीकृत करने के महत्त और संभावनाओं पर एक निबंध लिखें।

WhatsApp 7055667037

कार्य 2 : नवाचारी / वैकल्पिक विद्यालय का भ्रमण – स्कूली प्रक्रिया और पाठ्यचर्या लेन-देन पर अवलोकन रिपोर्ट

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. विद्यालय का संक्षिप्त परिचय
3. विद्यालय का वातावरण और दिनचर्या (Schooling Process)
4. कक्षा-कक्ष में पाठ्यचर्या लेन-देन (Curricular Transaction)
5. मूल्यांकन और फीडबैक की प्रक्रिया
6. शिक्षक और विद्यार्थियों की भूमिका
7. मेरी प्रमुख सीख (Reflections and Learning)
8. निष्कर्ष

1. प्रस्तावना

इस कार्य के अंतर्गत मैंने अपने क्षेत्र के एक नवाचारी/वैकल्पिक विद्यालय (काल्पनिक नाम: "नवदिशा लर्निंग सेंटर") का भ्रमण किया। इस विद्यालय की विशेषता है कि यहाँ रटकर पढ़ाने के बजाय अनुभव-आधारित, गतिविधि-आधारित और बच्चे-केंद्रित शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। मेरा उद्देश्य यह देखना था कि ऐसे स्कूल में प्रतिदिन की स्कूली प्रक्रिया कैसी होती है, पाठ्यचर्या को कैसे "जीया" जाता है, और इससे बच्चों के सीखने पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह रिपोर्ट मेरे उसी अवलोकन और व्यक्तिगत सीख पर आधारित है।

2. विद्यालय का संक्षिप्त परिचय

"नवदिशा लर्निंग सेंटर" शहर के किनारे स्थित एक छोटा-सा विद्यालय है, जहाँ लगभग 200 बच्चे प्री-प्राइमरी से कक्षा 8 तक पढ़ते हैं।

- कक्षाएँ छोटे समूहों में विभाजित हैं (लगभग 20-25 विद्यार्थी प्रति कक्षा)।
- विद्यालय का परिसर खुला, हरियाली से भरा और दीवारों पर बच्चों के बनाए चित्र, पोस्टर और प्रोजेक्ट लगे हुए थे।
- यहाँ पारंपरिक यूनिफॉर्म नहीं, बल्कि सरल, आरामदायक कपड़े पहनने की अनुमति थी।
- विद्यालय स्वयं को "child-friendly, activity-based" स्कूल कहता है।

KRNwala2

WhatsApp 7055667037

3. विद्यालय का वातावरण और दिनचर्या (Schooling Process)

सुबह का समय बहुत सहज और स्वागतपूर्ण लगा।

- बच्चे आते ही सीधे लाइन में खड़े नहीं हुए, बल्कि पहले अपने बैग रखकर खेल के मैदान या "मॉर्निंग सर्कल" स्थल पर इकट्ठा हुए।
- दिन की शुरुआत प्रार्थना के बजाय एक "Sharing Circle" से हुई, जहाँ 10-15 मिनट तक बच्चे और शिक्षक मिलकर किसी एक छोटे विषय पर बात करते हैं – जैसे "आज तुम्हें किस बात के लिए Thank You कहना है?" या "इस हफ्ते तुम क्या नया सीखना चाहते हो?"
- प्रत्येक पीरियड 40-45 मिनट का था, लेकिन घंटी का माहौल बहुत कठोर नहीं था; गतिविधि पूरी होने पर ही अगली गतिविधि शुरू होती।
- बीच-बीच में 5 मिनट के "stretch breaks", breathing exercises और छोटे-छोटे खेल कराए जाते, ताकि बच्चे थकान महसूस न करें।
- दोपहर के भोजन के समय बच्चे एक साथ बैठकर "साझा भोजन" करते, जहाँ कुछ बच्चे अपना घर का खाना भी दोस्तों के साथ बाँटते थे।

कुल मिलाकर, स्कूलिंग प्रक्रिया में "दबाव" से अधिक "खुलापन और अपनापन" महसूस हुआ।

KENwala2

4. कक्षा-कक्ष में पाठ्यचर्या लेन-देन (Curricular Transaction)

मैंने विशेष रूप से कक्षा 3 और कक्षा 6 के दो पीरियड़ों का अवलोकन किया – एक भाषा/EVS और दूसरा गणित।

(क) भाषा/पर्यावरण अध्ययन (कक्षा 3)

- विषय था: "मेरा गाँव/मेरा शहर"।
- शिक्षक ने सीधे पाठ नहीं पढ़ाया, बल्कि बोर्ड पर एक बड़ा नक्शा जैसा चित्र बनाया, और बच्चों से कहा – "तुम्हारे घर के आस-पास क्या-क्या है, बताओ।"
- बच्चे बारी-बारी से बोलते गए – मंदिर, नाला, बाजार, पार्क, बस स्टॉप इत्यादि।

WhatsApp 7055667037

- फिर बच्चों को 4-4 के समूहों में बाँटकर चार्ट पेपर दिए गए, और उनसे अपना "मोहल्ला/गाँव" बनाकर दिखाने को कहा गया।
- अंत में हर समूह ने अपनी तस्वीर दिखाकर बताया कि उन्होंने क्या बनाया और क्यों।

यहाँ पाठ्यचर्या का जो उद्देश्य था - बच्चे अपने परिवेश की समझ विकसित करें, शब्दावली बढ़े, बोलने-सुनने की क्षमता बढ़े - वह खेल-खेल में, गतिविधि के माध्यम से पूरा हो रहा था।

(ख) गणित (कक्षा 5)

- विषय था: "भिन्न (Fractions) और भागीदारी"।
- शिक्षक ने पहले चॉकलेट/रोटी के टुकड़ों का उदाहरण देकर पूछा - "अगर 4 दोस्तों में बराबर बाँटना हो तो कैसे बाँटोगे?"
- उसके बाद बच्चों को कागज़ की गोलियाँ (paper circles) दी गई और उनसे अलग-अलग हिस्से (1/2, 1/3, 1/4) काटकर दिखाने को कहा गया।
- बच्चों ने व्यावहारिक रूप से कटिंग की, फिर कॉपी में उसी को चित्र और संख्या के रूप में लिखा।

यहाँ "Concrete से Abstract" की ओर जाने वाली Pedagogy दिखी - पहले अनुभव, फिर प्रतीक/सिंबल।

KENwala2

5. मूल्यांकन और फीडबैक की प्रक्रिया

इस विद्यालय में मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा तक सीमित नहीं था।

- शिक्षक बच्चों के काम को "Observation Notes" में लिखते हैं - कौन बच्चा समूह में कैसे काम करता है, कौन किस प्रकार के सवाल पूछता है, आदि।
- बच्चों के "पोर्टफोलियो" बनाए जाते हैं, जिसमें उनकी साल भर की वर्कशीट, चित्र, प्रोजेक्ट, लेखन आदि एकत्र होते हैं।
- टर्म के अंत में Parent-Teacher Meeting में केवल मार्क्स-शीट नहीं, बल्कि इस पोर्टफोलियों के आधार पर बच्चे के विकास पर चर्चा होती है।
- कक्षा में तुरंत फीडबैक दिया जाता - "यह हिस्सा अच्छा है, यहाँ तुम और बेहतर कर सकते हो" - ताकि बच्चा उसी समय सुधार समझ सके।

इससे स्पष्ट हुआ कि यहाँ Assessment को "Learning को support करने वाला" माना गया, न कि केवल "Result घोषित करने वाला"।

WhatsApp 7055667037

6. शिक्षक और विद्यार्थियों की भूमिका

अवलोकन में मुझे सबसे बड़ा अंतर यही लगा कि शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध बहुत "मानवीय" और साझेदारी वाले थे।

- शिक्षक केवल आदेश देने वाला नहीं, बल्कि Facilitator की भूमिका में था – प्रश्न पूछना, बच्चों की चर्चा सुनना, बीच-बीच में मार्गदर्शन देना।
- बच्चे शिक्षक से डरते नहीं थे; वे खुलकर सवाल पूछते, असहमति भी रखते – जैसे "मिस, मुझे लगता है ऐसा भी हो सकता है ..."
- समूह-कार्य में बच्चे आपस में भूमिकाएँ बाँटते – कोई लिखता, कोई चित्र बनाता, कोई बोलता।
- संघर्ष होने पर भी शिक्षक तुरंत डाँटने के बजाय दोनों पक्षों से बात कराता और बच्चों से समाधान ढूँढ़ने को कहता।

ये सब चीज़ें "लोकतांत्रिक और सहयोगी" कक्षा-संस्कृति की ओर संकेत करती हैं।

7. मेरी प्रमुख सीख (Reflections and Learning)

इस भमण से मेरी सोच पर कई स्तरों पर प्रभाव पड़ा :

1. **पाठ्यचर्या को जीवंत बनाना :**
   वही NCERT/State Board की किताबें हों, लेकिन यदि शिक्षक रचनात्मक तरीके से गतिविधि, प्रश्न, प्रोजेक्ट और स्थानीय उदाहरणों का प्रयोग करे, तो पाठ्यचर्या बच्चों के जीवन से जुड़ जाती है।
2. **कक्षा का माहौल :**
   डर, चुप्पी और केवल अनुशासन से भरी कक्षा की जगह यदि सम्मान, संवाद और जिज्ञासा वाला माहौल बने, तो बच्चों की भागीदारी स्वतः बढ़ती है।
3. **बच्चों की विविधता :**
   यहाँ देखा कि अलग-अलग गति, रूचि और पृष्ठभूमि वाले बच्चों को समूह-कार्य और अलग-अलग प्रकार की गतिविधियों से जगह दी जा रही थी। यह Inclusive Education की वास्तविक तस्वीर के करीब लगा।
4. **मूल्यांकन की नई समझ :**
   मैंने महसूस किया कि Assessment केवल परीक्षा-पत्र नहीं, बल्कि शिक्षक की रोज़ की नज़र, बातचीत, पोर्टफोलियों और प्रोजेक्ट के माध्यम से भी गहराई से हो सकता है।
5. **शिक्षक की तैयारी :**
   ऐसा विद्यालय तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं सीखने के लिए तैयार हों, योजना बनाएँ और बच्चों के साथ धैर्य से काम करें।

KE Wala2

WhatsApp_7055667037

6. मेरी भूमिका :

- मैं केवल पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, सहयोगी और प्रेरक की भूमिका में रहना चाहता हूँ।
- मैं चाहूँगा कि हर बच्चा सीखे, प्रश्न पूछे, अपने विचार व्यक्त करे और आत्मविश्वास से आगे बढ़े।
- मैं बच्चों की रुचि, गति और आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करूँगा।

7. आगे की योजना :

- मैं भविष्य में और अधिक बाल-केंद्रित, गतिविधि-आधारित, समावेशी और तकनीक-सहायित शिक्षण करने का प्रयास करूँगा।
- मैं अपनी कमियों पर कार्य करूँगा और निरंतर सीखता रहूँगा।
- मेरा लक्ष्य है कि हर बच्चा यह महसूस करे – "मैं भी कर सकता हूँ"।

अंत में, यह अनुभव मेरे लिए बहुत ही सीखने वाला रहा। इसने मुझे एक बेहतर, संवेदनशील और जिम्मेदार शिक्षक बनने की दिशा में प्रेरित किया है।

8. निष्कर्ष

नवाचारी/वैकल्पिक विद्यालय में किया गया यह अवलोकन मेरे लिए एक महत्वपूर्ण और समृद्ध अनुभव रहा। इससे मुझे यह समझने का अवसर मिला कि –

- प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है और उसकी अपनी सीखने की गति और शैली होती है।
- विद्यालय केवल पढ़ाई का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास का केंद्र है।
- नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ बच्चों को अधिक सक्रिय, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाती हैं।
- एक शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं, बल्कि मार्गदर्शन, सहयोग और प्रेरणा देने की भी है।
- समुदाय, माता-पिता और स्थानीय परिवेश की भागीदारी से शिक्षा अधिक प्रभावी और सार्थक बनती है।

इस अवलोकन ने मुझे यह विश्वास दिलाया कि यदि हम बच्चों की आवश्यकताओं, रुचियों और वास्तविक जीवन अनुभवों को ध्यान में रखकर शिक्षण करें, तो शिक्षा सचमुच जीवन बदलने वाली शक्ति बन सकती है।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

कार्य 3 : Preparatory स्तर के स्कूल पाठ्यक्रम में IKS (Indian Knowledge Systems) के एकीकरण का महत्व और संभावनाएँ

विषय - सूची

1. प्रस्तावना
2. IKS (Indian Knowledge Systems) का अर्थ और दायरा
3. Preparatory स्तर की विशेषताएँ और IKS के लिए अनुकूलता
4. IKS को पाठ्यक्रम में शामिल करने का महत्व
   - 4.1 सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान
   - 4.2 स्थानीय परिवेश से जुड़ी सीख
   - 4.3 मूल्य-शिक्षा और जीवन कौशल
5. Preparatory स्तर पर IKS एकीकरण की प्रमुख संभावनाएँ
   - 5.1 भाषा और कहानियों के माध्यम से
   - 5.2 गणित और पर्यावरण अध्ययन में
   - 5.3 कला, खेल और उत्सवों के माध्यम से
6. व्यवहारिक उदाहरण - कक्षा 3-5 के लिए गतिविधियाँ
7. चुनौतियाँ और सावधानियाँ
8. निष्कर्ष

KENwaa2

1. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा परंपरा बहुत समृद्ध रही है - गुरुकुल से लेकर लोककथाओं, हस्तकलाओं, योग, आयुर्वेद, संगीत और जीवन-दर्शन तक। आधुनिक स्कूल शिक्षा में अक्सर यह सब हाशिए पर चला जाता है और बच्चा अपने ही समाज से कटा हुआ महसूस करने लगता है। NEP 2020 ने Indian Knowledge Systems (IKS) को शिक्षा में शामिल करने पर ज़ोर दिया है, विशेषकर शुरुआती कक्षाओं में, जहाँ बच्चे की सोच और मूल्य सबसे तेजी से बनते हैं। Preparatory स्तर (कक्षा 3-5) पर IKS का एकीकरण न केवल संभव है, बल्कि बच्चे के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक भी है।

WhatsApp_7055667037

2. IKS (Indian Knowledge Systems) का अर्थ और दायरा

IKS से आशय है - भारत की परंपरागत ज्ञान-धाराएँ, जिन्हें सदियों से अनुभव, प्रयोग और लोक-बुद्धि के आधार पर विकसित किया गया है। इसमें शामिल हैं -

- भारत की भाषाएँ, साहित्य, कहानियाँ, लोककथाएँ
- गणित, ज्योतिष, वास्तु, खगोल जैसे पारंपरिक ज्ञान
- आयुर्वेद, योग, प्राणायाम, भोजन और स्वास्थ्य से जुड़ी समझ
- कृषि, जल-संरक्षण, हस्तकला, लोक-कला, संगीत, नृत्य
- सामाजिक मूल्य - सहअस्तित्व, अहिंसा, करूणा, अतिथि-देवो-भव आदि

इनको आधुनिक दृष्टि से, वैज्ञानिक समझ के साथ, स्कूल पाठ्यक्रम में सार्थक रूप से जोड़ा जा सकता है।

3. Preparatory स्तर की विशेषताएँ और IKS के लिए अनुकूलता

Preparatory स्तर (8-11 वर्ष) पर -

- बच्चे जिज्ञासु, कल्पनाशील और कहानियों से सीखने में सक्षम होते हैं।
- वे स्थानीय उदाहरणों से जल्दी जुड़ते हैं और अमूर्त (abstract) से ज़्यादा ठोस (concrete) चीज़ों को आसानी से समझते हैं।
- कक्षा 3-5 का पाठ्यक्रम पहले से ही भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन, कला और खेल पर आधारित होता है - जो IKS के लिए स्वाभाविक जगहें हैं।

इसलिए यह स्तर IKS को सहज, रोचक और अर्थपूर्ण तरीकों से शामिल करने के लिए सबसे अनुकूल माना जा सकता है।

4. IKS को पाठ्यक्रम में शामिल करने का महत्व

4.1 सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान

जब बच्चा अपने पाठ्यपुस्तक में अपने गाँव/शहर की कहानियाँ, लोक-नायक, स्थानीय त्योहार, लोककला और अपनी भाषा के शब्द देखता है, तो उसे लगता है - "मेरी संस्कृति भी महत्वपूर्ण है।" यह भावना उसके आत्मसम्मान और सकारात्मक पहचान को मजबूत करती है।

KENwale2

WhatsApp 7055667037

4.2 स्थानीय परिवेश से जुड़ी सीख

IKS प्रकृति, मौसम, खेती, जल स्त्रोत, पशु-पक्षी और पर्यावरण से गहरे जुड़ी होती हैं। Preparatory स्तर पर जब EVS या विज्ञान जैसी विषयबस्तु को स्थानीय कृषि, पारंपरिक जल-संरक्षण, औषधीय पौंधों और मौसम-परंपराओं के साथ पढ़ाया जाएंगा, तो बच्चा किताब की दुनिया को अपनी वास्तविक दुनिया से जोड़ सकेगां। इससे सीख स्थायी और अर्थपूर्ण बनती हैं।

4.3 मूल्य-शिक्षा और जीवन कौशल

भारतीय लोककथाएँ, पंचतंत्र, जातक कथाएँ, विभिन्न संतों और लोकनायकों की कहानियाँ – ईमानदारी, सहयोग, साहस, करुणा, पर्यावरण-प्रेम जैसे मूल्यों को सरल तरीके से सिखाती हैं। Preparatory स्तर पर ये कहानियाँ और गतिविधियाँ बच्चों में जीवन कौशल (जैसे समस्या हल करना, टीम-वर्क, सहानुभूति) विकसित करने में बहुत सहायक हो सकती हैं।

5. Preparatory स्तर पर IKS एकीकरण की प्रमुख संभावनाएँ

5.1 भाषा और कहानियों के माध्यम से

- हिंदी/स्थानीय भाषा की पाठ्यपुस्तकों में लोककथाएँ, लोकगीत, पहेलियाँ, दोहे, सूक्तियाँ शामिल की जा सकती हैं।
- कक्षा में "कहानी-वाचन दिवस" रखा जा सकता है, जहाँ बच्चे अपने दादा-दादी या समुदाय से सुनी कहानियाँ लाएँ।
- कई भारतीय भाषाओं के शब्द, कहावतें और मुहावरे बच्चों को भाषा की विविधता और सौंदर्य से परिचित कराते हैं।

5.2 गणित और पर्यावरण अध्ययन में

- भारतीय पारंपरिक गिनती के खेल, नाप-तौल की स्थानीय इकाइयाँ (जैसे सेर, पांव, गज – केवल संदर्भ के रूप में) दिखाकर, आधुनिक मीट्रिक प्रणाली से तुलना करवाई जा सकती है।
- मंड़ला, रंगोली, कोलम जैसे पारंपरिक डिज़ाइनों में सममिति (symmetry), पैटर्न और ज्यामिति के मूल सिद्धांत समझाए जा सकते हैं।
- EVS में स्थानीय खेती के तरीके, बीज बचाने की पारंपरिक विधियाँ, वर्षा-जल संचय, पेड़ों और नदियों से जुड़ी कथाएँ पढ़ाई जा सकती हैं।

KPNwala2

WhatsApp_7055667037

5.3 कला, खेल और उत्सवों के माध्यम से

- संगीत और नृत्य में लोकगीत, भजन और क्षेत्रीय नृत्य की सरल रूपरेखाएँ सिखाई जा सकती हैं।
- कला-शिक्षा में मिट्टी-शिल्प, वारली/माधुबनी जैसे लोकचित्रों की सरल गतिविधियाँ दी जा सकती हैं।
- विद्यालय में मनाए जाने वाले त्यौहारों को केवल छुट्टी नहीं, बल्कि सीखने का अवसर बनाया जा सकता हैं - जैसे दिवाली पर दीया-निर्माण, पोंगल/संक्रांति पर फसल-कहानी, ईद पर साझा भोजन और भाईचारे की चर्चा आदि।

6. व्यवहारिक उदाहरण - कक्षा 3-5 के लिए गतिविधियाँ

कुछ ठोस उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं:

1. कक्षा 3 (भाषा + EVS):

"हमारे घर की दादी/नानी की कहानी" - बच्चों से एक लोककथा घर से सुनकर आने और कक्षा में सुनाने को कहना, फिर उस पर चित्र बनवाना।

2. कक्षा 4 (गणित + कला):

रंगोली/कोलम पैटर्न की तस्वीर दिखाकर, बच्चों से ग्रिड पेपर पर उसी पैटर्न को दोहराना, सममिति की रेखा पहचानना।

3. कक्षा 5 (EVS):

"पारंपरिक जल-स्रोत" - गाँव/शहर के पुराने कुएँ, तालाब, बावड़ी के बारे में जानकारी इकट्ठी करना, बुजुर्गों का छोटा इंटरव्यू लेना, फिर कक्षा में पोस्टर/प्रस्तुति के रूप में साझा करना।

4. योग और स्वास्थ्य (सभी कक्षाएँ):

सुबह की प्रार्थना के साथ 2-3 सरल योगासन और प्राणायाम जोड़ना, और उनसे मिलने वाले लाभ बच्चों की भाषा में समझाना।

इन गतिविधियों से विषय भी पूरा होते हैं और IKS भी स्वाभाविक रूप से बच्चे के सीखने का हिस्सा बन जाता हैं।

KENwala2

WhatsApp 7055667037

7. चुनौतियाँ और सावधानियाँ

IKS को पाठ्यक्रम में शामिल करते समय कुछ चुनौतियाँ और सावधानियाँ ध्यान में रखना आवश्यक हैं –

7.1 शिक्षक-तैयारी

- कई शिक्षक स्वयं IKS से परिचित नहीं हैं या इसे "पुराना" मानते हैं।
- उन्हें संवेदनशील और वैज्ञानिक दृष्टि से प्रशिक्षण देना होगा, ताकि वे IKS को अंध-विश्वास नहीं, बल्कि ज्ञान और अनुभव के रूप में प्रस्तुत करें।

7.2 संतुलित दृष्टि

- IKS को शामिल करते समय किसी एक धर्म, समुदाय या क्षेत्र को अत्यधिक बढ़ावा देकर बाकी को नज़रअंदाज़ करना ठीक नहीं होगा।
- लक्ष्य समावेशी और बहुलतावादी (pluralistic) दृष्टि रखना हैं – "विविधता में एकता" के साथ।

7.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण

- परंपराओं के पीछे के कारणों पर प्रश्न करने और तर्क करने की अनुमति देना ज़रूरी है।
- जहाँ परंपरा वैज्ञानिक और मानवीय मूल्यों से मेल खाती है, उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।
- जहाँ नहीं, वहाँ बच्चों को सोचने और बेहतर रास्ता चुनने की क्षमता देना जरूरी है।

इन सावधानियों के साथ IKS का एकीकरण अधिक प्रभावी, संतुलित और सार्थक बन सकता हैं।

8. निष्कर्ष

Preparatory स्तर के पाठ्यक्रम में IKS का एकीकरण बच्चे को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए, उसे आधुनिक ज्ञान के लिए भी तैयार कर सकता है। इससे उसकी भाषा, सोच, मूल्य, रचनात्मकता और पर्यावरण से जुड़ाव – सब पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। साथ ही, यह आवश्यक है कि IKS को केवल "भावनात्मक" नहीं, बल्कि समकालीन और वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, जिससे बच्चा न तो अपनी संस्कृति से कटे, न ही अंध-अनुकरण में फ़ँसे। यदि शिक्षक और स्कूल संवेदनशीलता, रचनात्मकता और समावेशन के साथ IKS को पाठ्यक्रम में पिरो सकें, तो Preparatory स्तर की शिक्षा वास्तव में "स्थानीय से वैश्विक" की यात्रा बन सकती है – जहाँ बच्चा अपनी पहचान के साथ-साथ दुनिया से संवाद करने की क्षमता भी विकसित कर पाता है।

KENwala2

NIOS

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

WhatsApp_7055667037

National Institute of Open Schooling

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)

(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course . 3

भाषा का शिक्षाशास्त्र-1 (हिंदी/क्षेत्रीय भाषा)

पाठ्यक्रम संख्या 3 – भाषा का शिक्षाशास्त्र-1 (हिंदी/क्षेत्रीय भाषा)

Course : 3

WhatsApp 7055667037

① बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के संदर्भ में भाषा शिक्षण संबंधी मुख्य बिंदुओं की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

② बुनियादी स्तर पर आप मौखिक भाषा का आकलन किस प्रकार करेंगे? बच्चों की भाषायी दक्षताओं के संदर्भ में कम-से-कम पाँच रणनीतियों का कक्षा में उपयोग करते हुए अपने अनुभव की विश्लेषणात्मक विबेचना कीजिए।

KENwala2

WhatsApp 7055667037

TASK 1 : बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के संदर्भ में भाषा शिक्षा संबंधी मुख्य बिंदुओं की आलोचनात्मक विवेचना।

भूमिका

शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS 2022) ने बुनियादी स्तर (Foundational Stage) की शिक्षा को नया दृष्टिकोण और दिशा प्रदान की हैं। भाषा शिक्षा किसी भी बच्चे के सर्वांगीण विकास का आधार हैं, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही बच्चा अपने अनुभव साझा करता हैं, सोचता हैं, सीखता हैं और समाज से जुड़ता हैं। NCF-FS 2022 के अनुसार, भाषा शिक्षण को बालकेंद्रित, अनुभवजन्य, बहुभाषिकता और स्थानीयता के आधार पर पुनर्गठित किया गया हैं। प्रस्तुत विवेचना में भाषा शिक्षा से जुड़े मुख्य बिंदुओं की आलोचनात्मक समीक्षा की गई हैं।

KENwala2

1. भाषा शिक्षा के मुख्य बिंदु (NCF-FS 2022 के अनुसार)

(क) बालकेंद्रित और अनुभवजन्य भाषा शिक्षण

- बच्चों के अनुभव, परिवेश और रूचि के अनुसार भाषा शिक्षण।
- खेल, कहानी, कविता, संवाद, चित्र, गीत, नाटक आदि के माध्यम से भाषा की समझ विकसित करना।

WhatsApp_7055667037

(ख) बहुभाषिकता और स्थानीय भाषा का महत्व

- बच्चा अपनी मातृभाषा/घर की भाषा में सबसे सहज रूप से सीखता हैं।
- कक्षा में बच्चों की विविध भाषाओं का सम्मान और उपयोग।
- हिंदी/क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं की समझ को भी महत्व।

(ग) सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना - चारों कौशलों का विकास

- भाषा शिक्षा केवल पढ़ना-लिखना नहीं, बल्कि सुनना ओर बोलना भी उतना ही महत्वपूर्ण।
- बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देना, संवाद में भागीदारी बढ़ाना।

(घ) संवाद और सहभागिता

- बच्चों को समूह में कार्य, चर्चा, प्रश्न पूछने और उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना।
- शिक्षक का भूमिका मार्गदर्शक की तरह, न कि केवल ज्ञान देने वाले की तरह।

(ङ) साहित्यिक और सांस्कृतिक विविधता

- स्थानीय लोककथाएँ, गीत, मुहावरे, कहावतें, और कविता के माध्यम से भाषा का विस्तार।
- साहित्य में विविधता से बच्चों में रूचि और संवेदनशीलता का विकास।

(च) मूल्यांकन की प्रक्रिया

- सतत और समग्र मूल्यांकन (CCE), जिसमें बच्चे की भाषा दक्षता का आकलन गतिवाधेयों, वर्कशीट्स, कहानी सुनाने, चित्र वर्णन, आदि के माध्यम से।
- केवल लिखित परीक्षा पर निर्भरता नहीं।

KENwalaa

WhatsApp 7055667037

2. आलोचनात्मक विवचना

(क) बालकेंद्रित शिक्षण की चुनौतियाँ

- बालकेंद्रित और अनुभबजन्य शिक्षण में शिक्षक को बच्चों की रूचि, भाषा स्तर, और सामाजिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक हैं।
- अधिकांश विद्यालयों में पाठ्यपुस्तक आधारित, रटने पर बल देने वाली भाषा शिक्षा होती हैं, जिससे बच्चों की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति सीमित हो जाती हैं।

(ख) बहुभाषिकता की वास्तविकता

- कक्षा में विविध भाषाओं के बच्चों को एक साथ पढ़ाना चुनौतीपूर्ण हैं।
- शिक्षक की भाषाई दक्षता सीमित होने पर स्थानीय भाषा को उचित सम्मान नहीं मिल पाता।
- कई बार हिंदी/क्षेत्रीय भाषा की तुलना में अंग्रेज़ी को अधिक महत्ब दिया जाता हैं, जिससे बच्चों की मातृभाषा कमजोर पड़ती हैं।

(ग) चारों भाषा कौशलों का संतुलन

- सुनना और बोलना पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता, जबकि ये कौशल मौखिक संचार के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।
- विद्यालयों में पढ़ना-लिखना को ही भाषा शिक्षा मान लिया जाता हैं, जिससे बच्चों की अभिव्यक्ति कमज़ोर रह जाती हैं।

KEWal92

WhatsApp 7055667037

3. भाषा शिक्षण के चारों कौशल

(क) सुनना और बोलना

- सुनना भाषा सीखने की पहली सीढ़ी है।
- बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनने और अपनी बात स्पष्ट रूप से बोलने के अनेक अवसर दिए जाएँ।
- कहानियों, संवाद, समूह चर्चा और खेल के माध्यम से मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाए।

(ख) पढ़ना

- बच्चों में पढ़ने की रूचि विकसित की जाए।
- चित्र, शब्द, वाक्य और सरल पाठ्य सामग्री के माध्यम से अर्थपूर्ण पठन अनुभव दिया जाए।
- पठन को केवल यांत्रिक न बनाकर, समझ के साथ जोड़ा जाए।

(ग) लिखना

- बच्चों को अपने विचार, अनुभव और कल्पनाएँ लिखने के अवसर दिए जाएँ।
- चित्र देखकर लिखना, कहानी पूरी करना, पत्र लिखना जैसी गतिविधियाँ उपयोगी हैं।
- लिखने को रचनात्मक और आनंददायक बनाया जाए, न कि केवल परीक्षा के लिए।

4. संवाद और सहभागिता

- कक्षा में बच्चों को खुलकर बोलने, प्रश्न पूछने और अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- समूह कार्य, जोड़ी में कार्य, चर्चा, वाद-विवाद और नाटक जैसी गतिविधियाँ भाषा विकास में सहायक हैं।
- शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक की हो, न कि केवल जानकारी देने वाले की।

KENwala2

WhatsApp 7055667037

5. भाषा शिक्षण के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री

(क) शिक्षण-अधिगम सामग्री का अर्थ और महत्व

- शिक्षण-अधिगम सामग्री वे साधन हैं, जिनकी सहायता से भाषा को रोचक, सरल और प्रभावी ढंग से सिखाया और सीखा जाता है।
- इनसे बच्चों की जिज्ञासा, रुचि और सक्रिय भागीदारी बढ़ती है।
- यह सामग्री भाषा के चारों कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के विकास में सहायक होती है।

(ख) शिक्षण-अधिगम सामग्री के प्रकार

- मुद्रित सामग्री – पाठ्यपुस्तक, कहानी-पुस्तक, चित्र, कार्यपत्रक, पोस्टर, शब्द-कार्ड आदि।
- अमुद्रित सामग्री – वास्तविक वस्तुएँ, खिलौने, मॉडल, स्थानीय संसाधन आदि।
- डिजिटल सामग्री – ऑडियो, वीडियो, कंप्यूटर, मोबाइल ऐप, स्मार्ट बोर्ड आदि।
- स्थानीय/सामुदायिक सामग्री – लोककथाएँ, कहावतें, गीत, स्थानीय समाचार, पर्यावरण आदि।

(ग) सामग्री के चयन और उपयोग के सिद्धांत

- सामग्री बच्चा-केंद्रित, रोचक, सरल और आयु-उपयुक्त होनी चाहिए।
- यह बच्चों के अनुभव, परिवेश और संस्कृति से जुड़ी हो।
- भाषा के उद्देश्य के अनुसार सामग्री का चयन करना चाहिए।
- सामग्री का उपयोग गतिविधि-आधारित और सहभागितापूर्ण होना चाहिए।

6. भाषा का आकलन

- भाषा का आकलन केवल परीक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सतत और व्यापक प्रक्रिया है।
- आकलन से बच्चों की प्रगति, कठिनाइयों और आवश्यक सहयोग की जानकारी मिलती है।
- आकलन के विविध उपकरण – मौखिक प्रश्न, लिखित कार्य, प्रेक्षण, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो, स्व-मूल्यांकन आदि।
- आकलन का उद्देश्य बच्चों को सीखने में सहायता देना है, न कि केवल अंक देना।

KENwalaz

WhatsApp 7055667037

7. भाषा शिक्षण की विधियाँ

(क) विभिन्न भाषा शिक्षण विधियाँ

- भाषा शिक्षण के लिए अनेक विधियाँ हैं – व्याकरण-अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, श्रव्य-दृश्य विधि, संप्रेषणात्मक विधि, समेकित विधि आदि।
- प्रत्येक विधि के अपने लाभ और सीमाएँ हैं।
- शिक्षक को परिस्थितिनुसार उपयुक्त विधि का चयन करना चाहिए।

8. भाषा शिक्षण में मूल्यांकन

(क) मूल्यांकन का अर्थ और उद्देश्य

- मूल्यांकन का अर्थ हैं – बच्चों की भाषा संबंधी प्रगति का आकलन करना।
- इसका उद्देश्य बच्चों की क्षमताओं, कठिनाइयों और आवश्यकताओं की पहचान करना हैं।
- मूल्यांकन सतत और व्यापक होना चाहिए, जिसमें मौखिक और लिखित दोनों रूप शामिल हों।

(ख) मूल्यांकन के उपकरण

- मौखिक प्रश्न, लिखित कार्य, परियोजना, प्रेक्षण सूची, चेकलिस्ट, पोर्टफोलियों, स्व-मूल्यांकन और सहकर्मी मूल्यांकन आदि।

9. समावेशी कक्षा में भाषा शिक्षण

(क) समावेशी शिक्षा का अर्थ

- समावेशी शिक्षा का अर्थ है – प्रत्येक बच्चे को, उसकी क्षमताओं, पृष्ठभूमि, भाषा, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि की परवाह किए बिना, समान अवसर देना।

KEI Wala

WhatsApp: 7055667037

10. समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका

(क) शिक्षक की भूमिका

- शिक्षक को सभी बच्चों को समान अवसर देना चाहिए।
- विविध आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहचान कर, उनकी सहायता के लिए उपयुक्तत रणनीतियाँ अपनानी चाहिए।
- सहयोगात्मक, संवेदनशील और सम्मानजनक वातावरण बनाना शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है।

11. भाषा सीखने में अवरोध

(क) अवरोधों के प्रकार

- भाषा सीखने में विभिन्न प्रकार के अवरोध हो सकते हैं – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और पर्यावरणीय।
- सुनने या बोलने में कठिनाई, हीन भावना, उपहास, भाषाई भेदभाव और संसाधनों की कमी प्रमुख अवरोध हैं।
- शिक्षक को इन अवरोधों की पहचान कर, उपयुक्त्त सहयोग और संवेदनशील व्यवहार द्वारा इन्हें कम करने का प्रयास करना चाहिए।

12. भाषा मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ

(क) मूल्यांकन की प्रमुख प्रक्रियाएँ

- भाषा मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ सतत् और व्यापक होनी चाहिए।
- मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षा, अवलोकन, परियोजना, गतिविधि-आधारित मूल्यांकन, और चेकलिस्ट प्रमुख प्रक्रियाएँ हैं।
- मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों की प्रगति को समझना और आगे की शिक्षण योजना बनाना है, न कि केवल अंक देना।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

बुनियादी स्तर पर मौखिक भाषा का आकलन: पाँच रणनीतियों के कक्षा-उपयोग एवं अनुभव की विश्लेषणात्मक विवेचना

भूमिका

बुनियादी स्तर (कक्षा 1-2) के बच्चों के लिए मौखिक भाषा (Oral Language) का विकास और आकलन अत्यंत महत्वपूर्ण है। मौखिक भाषा बच्चों के विचार अभिव्यक्ति, संवाद, सुनने-बोलने की क्षमता, और सामाजिक सहभागिता का आधार है।

KENwala2

पारंपरिक मूल्यांकन अक्सर लिखित परीक्षा तक सीमित रहता है, जबकि मौखिक दक्षताओं का समग्र विकास और आकलन बच्चों की वास्तविक भाषा क्षमता को समझने के लिए आवश्यक है।

मौखिक भाषा के आकलन हेतु कक्षा में विविध रण-नीतियों का प्रयोग किया जा सकता है, जिससे बच्चों की भाषा दक्षता, आत्मविश्वास, और संवाद कौशल का संतुलित विकास होता है।

WhatsApp_7055667037

1. मौखिक भाषा आकलन की आवश्यकता

- बच्चों की वास्तविक भाषा-क्षमता का पता चलता है।
- सुनना, समझना, बोलना, प्रश्न करना, उत्तर देना, संवाद करना जैसी दक्षताओं का मूल्यांकन संभव होता है।
- कमजोर बच्चों की पहचान और उन्हें सहयोग देने का अवसर मिलता है।
- यह बालकेंन्द्रित, समावेशी और आनंददायक शिक्षण का आधार बनता है।

2. मौखिक भाषा आकलन की पाँच रणनीतियाँ

1. कहानी सुनाना एवं पुनर्कथन (Storytelling & Retelling)

प्रक्रिया :

- शिक्षक बच्चों को एक छोटी-सी कहानी सुनाते हैं।
- बच्चें कहानी को अपने शब्दों में दोहराते हैं, अपने अनुभव या कल्पना जोड़ते हैं।
- शिक्षक बच्चों की भाषा, उच्चारण, भाव, अनुक्रम और रचनात्मकता का मूल्यांकन करते हैं।

कक्षा अनुभव :

- बच्चों ने "चूहे रानी" कहानी सुनकर अपनी-अपनी शैली में सुनाई।
- कुछ बच्चों ने कहानी में नया पात्र जोड़ दिया, कुछ ने अंत बदल दिया।
- इससे उनकी कल्पना, अभिव्यक्ति और सुनने-बोलने की क्षमता सामने आई।

KENwala2

WhatsApp 7055667037

2. चित्र वर्णन (Picture Description)

प्रक्रिया :

- बोर्ड पर एक चित्र (जैसे - बिल्ली, पार्क, परिवार) दिखाया जाता है।
- बच्चें चित्र को देखकर बोलते हैं - "चित्र में क्या है?", "क्या हो रहा है?", "तुम क्या सोचते हो?"
- शिक्षक बच्चों के शब्द चयन, वाक्य संरचना, भाव और विवरण की क्षमता का आकलन करते हैं।

कक्षा अनुभव :

- "पार्क का चित्र" देखकर बच्चों ने विविध बातें बताई - "बच्चे झूला झूल रहे है", "पेड़ के नीचे बिल्ली बैठी है"।
- कमजोर बच्चों ने भी चित्र देखकर बोलना शुरू किया, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

3. समूह चर्चा एवं संवाद (Group Discussion & Dialogue)

प्रक्रिया :

- किसी विषय (जैसे - "मुझे क्या अच्छा लगता है?", "पढ़ाई या खेल?") पर चर्चा कराई जाती है।
- बच्चें अपनी राय बोलते हैं, एक-दूसरे की बात सुनते हैं, प्रश्न करते हैं।
- शिक्षक बच्चों की सहभागिता, विचार अभिव्यक्ति, सुनने-बोलने की दक्षता का मूल्यांकन करते हैं।

कक्षा अनुभव :

- "खेलना क्यों अच्छा लगता है?" विषय पर बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए।
- कुछ बच्चों ने तर्क दिए, कुछ ने उदाहरण दिए।
- समूह में संवाद से बच्चों की सहभागिता और भाषा कौशल में स्पष्ट वृद्धि देखी गई।

KENwala2

WhatsApp 7055667037

4. भूमिका-निर्वाह / अभिनय (Role Play / Drama)

प्रक्रिया :

- बच्चों को कहानी के पात्र, दैनिक जीवन की स्थिति, या संवाद के रोल दिए जाते हैं।
- बच्चें अभिनय करते हैं, संवाद बोलते हैं और हावभाव दिखाते हैं।
- शिक्षक बच्चों के उच्चारण, भाव, संवाद शैली और आत्मविश्वास का आकलन करते हैं।

कक्षा अनुभव :

- "माँ और मून्ना" का अभिनय करते समय एक शांत बच्चा पूरे आत्मविश्वास से संवाद बोला।
- बच्चों ने पात्र बदल-बदल कर संवाद बोले, जिससे उनकी भाषा, भाव और रचनात्मकता का विकास हुआ।
- कुछ बच्चों ने अपनी ओर से नए संवाद भी जोड़े, जो उनकी कल्पना शक्ति को दर्शाता है।

5. मौखिक प्रश्नोत्तरी (Oral Quiz & Questioning)

प्रक्रिया :

- शिक्षक पाठ, कहानी या चित्र के आधार पर मौखिक प्रश्न पूछते हैं।
- बच्चें उत्तर देते हैं, तर्क देते हैं और अपने अनुभव साझा करते हैं।
- शिक्षक बच्चों की समझ, स्मरण शक्ति, तर्क क्षमता और भाषा संरचना का मूल्यांकन करते हैं।

कक्षा अनुभव :

- "खिलौने" पाठ के बाद पूछा - "खिलौने क्या होते हैं?", "तुम्हें कौन सा खिलौना पसंद है?"
- बच्चों ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिए और अपने अनुभव साझा किए।
- प्रश्नोत्तरी के दौरान कमजोर बच्चों को भी बोलने का अवसर मिला, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

3. कक्षा में इन रणनीतियों का उपयोग : अनुभव एवं विश्लेषण

(क) बालकेंद्रित एवं समावेशी वातावरण

- मौखिक आकलन ने कक्षा को बालकेंद्रित और समावेशी बनाया।
- कमजोर, शर्मीले, या मातृभाषा बोलने वाले बच्चों को भी अपनी बात कहनें का अवसर मिला।
- समूह गतिविधियों से सहयोग, सहानुभूति और सामाजिक कौशल विकसित हुए।

(ख) भाषा कौशलों का संतुलित विकास

- सुनना, बोलना, समझना, तर्क करना, कल्पना करना - सभी कौशलों का अभ्यास हुआ।
- बच्चों की अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और संवाद क्षमता में स्पष्ट वृद्धि देखी गई।
- चित्र, कहानी, अभिनय और चर्चा ने बच्चों को भाषा के विविध प्रयोग सिखाए।

(ग) आत्मविश्वास एवं सहभागिता

- नियमित मौखिक आकलन से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा।
- कई बच्चों ने पहली बार कक्षा में खुलकर बोलना शुरू किया।
- समूह चर्चा और अभिनय नें बच्चों में नेतृत्व, सहयोग और संवाद कौशल विकसित किए।

(घ) मूल्यांकन की प्रक्रिया में विविधता

- मौखिक आकलन ने शिक्षक को बच्चों की वास्तविक भाषा-क्षमता जानने का अवसर दिया।
- केवल लिखित परीक्षा पर निर्भरता कम हुई, समग्र मूल्यांकन संभव हुआ।
- बच्चों की रुचि, भागीदारी और सीखने की गहराई में वृद्धि हुई।

KENwala2

WhatsApp_7055667037

4. कक्षा में इन रणनीतियों का उपयोग : अनुभव एवं विश्लेषण (जारी)

(च) आत्मविश्वास एवं सहभागिता

- नियमित मौखिक आकलन से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा।
- कई बच्चों ने पहली बार कक्षा में खुलकर बोलना शुरू किया।
- समूह चर्चा और अभिनय नें बच्चों में नेतृत्व, सहयोग और संवाद कौशल विकसित किए।
- शिक्षक के प्रोत्साहन और सकारात्मक प्रतिक्रिया से बच्चे अधिक सक्रिय और सहभागी बने।

(छ) मूल्यांकन की प्रक्रिया में विविधता

- मौखिक आकलन ने शिक्षक को बच्चों की वास्तविक भाषा-क्षमता जानने का अवसर दिया।
- केवल लिखित परीक्षा पर निर्भरता कम हुई और समग्र मूल्यांकन संभव हुआ।
- बच्चों की रुचि, भागीदारी और सीखने की गहराई में वृद्धि हुई।
- विभिन्न रणनीतियों के प्रयोग से मूल्यांकन अधिक रोचक, बालकेंद्रित और समावेशी बना।

(ज) चुनौतियों एवं समाधान

- कुछ बच्चे शुरुआत में संकोच करते थे और बोलने से हिचकिचाते थे।
- मातृभाषा/घर की भाषा के शब्दों का प्रयोग कर बच्चों को सहज बनाया गया।
- नियमित अभ्यास, छोटे समूहों में गतिविधि और प्रोत्साहन से सभी बच्चें धीरे-धीरे बोलने लगे।
- शिक्षक ने बच्चों को प्रेरित किया - "गलती से मत डरना, बोलो, तुम्हारी बात महत्वपूर्ण है।"

KENwala2

WhatsApp_7055667037

विश्लेषणात्मक विवेचना

- मौखिक भाषा का आकलन बच्चों की वास्तविक भाषा दक्षता को सामने लाता है।
- पाँच रणनीतियाँ – कहानी, चित्र, चर्चा, अभिनय, प्रश्नोत्तरी – ने कक्षा को सक्रिय, संवादात्मक और आनंददायक बनाया।
- बच्चों की अभिव्यक्ति, कल्पना, तर्क, और आत्मविश्वास में स्पष्ट वृद्धि देखी गई।
- समावेशी वातावरण ने सभी बच्चों को सीखने का समान अवसर दिया।
- शिक्षक को बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकता, रुचि, और भाषा स्तर समझने में सहायता मिली।

KENwala2

निष्कर्ष

- बुनियादी स्तर पर मौखिक भाषा का आकलन केवल परीक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि बच्चों की अभिव्यक्ति, संवाद, कल्पना, और सामाजिक कौशल का समग्र विकास है।
- कक्षा में विविध रणनीतियों के प्रयोग से बच्चों की भाषा दक्षता, आत्मविश्वास, और सहभागिता बढ़ती है।
- शिक्षक को चाहिए कि वे मौखिक आकलन को नियमित, बालकेंन्द्रित, और समावेशी बनाएं, ताकि प्रत्येक बच्चा अपनी भाषा में सोच सके, बोल सके, और समाज से जुड़ सके।
- भविष्य में भी मौखिक भाषा आकलन को प्राथमिकता देकर बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में कार्य करना आवश्यक है।

WhatsApp_7055667037

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
National Institute of Open Schooling
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)
(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course . 4

Pedagogy of Language-II (English)

पाठ्यक्रम संख्या 4 – भाषा का शिक्षाशास्त्र-2 (अंग्रेजी)

KENwala2

WhatsApp 7055667437

Course 4

1. Critically analyze the present NCERT / state board English (or any L-II) textbook and present a written report. Aspects of analysis should include learning outcomes of L-II, language, content, illustrations, inclusion, stereotypes, assessment etc.

2. Discuss the challenges regarding English language (or any L-II) learning with special reference to your own multilingual Indian classroom. Suggest some strategies to address these challenges.

KENwala2

SECTION A

WhatsApp_7055667037

Task

Critically analyze the present NCERT / state board English (or any L-II) textbook and present a written report. Aspects of analysis should include learning outcomes of L-II, language, content, illustrations, inclusion, stereotypes, assessment etc.

Critical Analysis of an English Language-II Textbook

KENwala2

Introduction

A textbook is an important part of teaching and learning. In English Language-II (L-II), the textbook helps children learn English in a simple and useful way. It should help children listen, speak, read, and write English. It should also help them think, share their ideas, work with others, and understand the world around them. This report gives a critical analysis of an English Language-II textbook used at the NCERT or State Board level. The main areas discussed are learning outcomes, language, content, pictures, inclusion, stereotypes, and assessment.

1. Learning Outcomes of L-II

The main aim of English Language-II is to help children use English for communication. The textbook gives children many chances to develop the four basic language skills: listening, speaking, reading, and writing.

WhatsApp_7055667037

Through stories, poems, conversations, questions, and classroom activities, children learn to understand English and express their own ideas. They also learn new words, make sentences, read short texts, and write simple answers.

The textbook is useful for building basic language skills. However, the learning goals of every lesson should be clearly given. This will help teachers understand what children should learn after completing a lesson. More activities such as pair work, group work, role play, conversation, and simple projects can make learning more active and useful.

KENwala2

2. Language Used in the Textbook

The language of an English textbook should be simple and suitable for the age of the children. The textbook uses stories, poems, dialogues, and short passages to introduce children to English. These help children learn new words and common sentences.

For many children, especially those who do not use English at home, some words and sentences may still be difficult. Teachers may need to explain new words with pictures, examples, actions, and simple meanings. Word lists and small language activities can also help children.

WhatsApp 7055667037

The textbook should also give importance to children's home languages. Children can understand a new language better when they are allowed to connect English with the language they already know. This can make English learning easier and more comfortable.

3. Content of the Textbook

The content of the textbook should be interesting and connected with the lives of children. Stories and poems about family, friends, school, animals, nature, festivals, games, and daily life can help children understand the lessons easily.

The textbook should not only teach language but also help children learn about the world. It should encourage children to ask questions, think about problems, share their views, and use their imagination.

The content should include both stories and useful information. It should also show different parts of India, different cultures, different types of families, and different ways of living. Local examples can make the textbook more meaningful for children. The content should be suitable for children and should not contain unnecessary difficult ideas.

KEWala2

WhatsApp 7055667037

4. Pictures and Illustrations

Pictures are very important in a primary-level English textbook. Children can understand a lesson better when they see pictures related to the text. Pictures can also make the textbook attractive and increase children's interest in reading.

The pictures should be clear, colourful, simple, and suitable for the age of the learners. They should show different kinds of children, families, places, jobs, and cultures.

Pictures should not be used only for decoration. Teachers can ask children to look at a picture and talk about it. They can ask children to describe what they see, make a story, answer questions, or write a few sentences. In this way, pictures can help develop speaking, reading, and writing skills.

KENwala2

5. Inclusion and Diversity

India has children from many different backgrounds. Therefore, an English textbook should give space to all kinds of learners. It should show children from different states, cultures, languages, communities, and family backgrounds.

Children with disabilities should also be included in the textbook. They should be shown as active members of the classroom and society. They should not be shown only as people who need help.

WhatsApp_7055667037

The textbook should also show different types of families and different living conditions. Such content can help children understand and respect people who may be different from them. It can teach values such as kindness, equality, cooperation, and respect.

6. Stereotypes and Gender

A textbook should be careful about showing the roles of boys and girls. Sometimes textbooks may show women mainly doing household work and men mainly doing jobs outside the home. Such examples can create wrong ideas in the minds of children.

Boys and girls should both be shown studying, playing games, helping at home, using computers, doing science activities, becoming teachers, doctors, engineers, farmers, artists, and taking leadership roles.

The textbook should also avoid connecting a particular job, activity, dress, or ability with only one gender or one social group. Equal representation can help children develop respect for everyone.

7. Assessment

Assessment helps teachers know how much children have learned. The textbook includes different types of questions, reading tasks, vocabulary work, grammar exercises, and writing activities. These are useful for checking children's understanding.

KENwala2

WhatsApp_7055667037

However, language learning should not be checked only through written tests. Children also need to be assessed in listening and speaking. Activities such as reading aloud, storytelling, conversation, role play, group discussion, drawing and describing pictures, and short presentations can be used.

Teachers can also use simple projects, notebooks, portfolios, peer assessment, and self-assessment. Assessment should help children improve rather than make them afraid of making mistakes.

Conclusion

The English Language-II textbook is an important tool for developing children's English language skills. It provides stories, poems, activities, pictures, and exercises that help children learn English. It also gives opportunities to develop reading, writing, speaking, and listening skills.

However, the textbook can be improved by using more simple and daily-life language, giving clear learning goals, including more local and cultural examples, showing greater diversity, avoiding gender stereotypes, and using different ways of assessment.

Overall, a good English Language-II textbook should be simple, interesting, child-friendly, inclusive, and useful in daily life. It should give every child a chance to learn English with confidence and enjoy the process of learning.

KENwala2

WhatsApp 7055667037

Section B

TASK

Discuss the challenges regarding English language (or any L-II) learning with special reference to your own multilingual Indian classroom. Suggest some strategies to address these challenges.

Challenges of English Language Learning in a Multilingual Indian Classroom

Introduction

India is a country with many languages and cultures. In an Indian classroom, children may come from different language backgrounds. They may speak Hindi, Bengali, Urdu, Marathi, Punjabi, Tamil, Telugu, or another local language at home. English may be their second or third language. This multilingual situation is a great strength, but it can also create some challenges in learning English.

In my multilingual classroom, children have different levels of English knowledge and different experiences of using the language. Some children can understand and speak simple English, while others may feel shy or find it difficult to understand even simple sentences. Therefore, teaching English in such a classroom requires patience, suitable methods, and respect for all languages.

KENwala2

WhatsApp_7055667037

1. Different Language Backgrounds

One of the main challenges is that children come from different language backgrounds. The language used at home may be completely different from English. As a result, children may find it difficult to understand English words, sentences, and instructions.

For example, a child who speaks Hindi or another Indian language at home may first think about an idea in the home language and then try to express it in English. This may take more time and may lead to mistakes.

KENwala2

Strategy

The teacher should allow children to use their home language when needed. Important words can be explained in both English and the familiar language of the children. The teacher can slowly move from the home language to English. This helps children understand English without feeling afraid.

WhatsApp_7055667037

2. Fear of Making Mistakes

Many children are afraid of speaking English because they think that other students may laugh at their mistakes. Some children remain silent even when they know the answer. This fear can reduce their confidence and participation.

Strategy

The teacher should create a friendly classroom where mistakes are treated as a normal part of learning. Children should not be laughed at or punished for wrong pronunciation or grammar. The teacher can first ask children to speak in pairs or small groups. After gaining confidence, they can speak in front of the whole class.

KENwala2

3. Limited Exposure to English

Many children do not hear or speak English outside the classroom. Their parents may also not be able to communicate with them in English. Therefore, they get very little practice after school.

WhatsApp_7055667037

Strategy

The teacher can create a small English-speaking environment in the classroom. Simple sentences such as "May I come in?", "Please give me the book," "What is your name?" and "Can you help me?" can be used regularly. English songs, stories, poems, games, and short conversations can also give children more opportunities to hear and use English.

4. Differences in Learning Levels

A multilingual classroom often has children with different levels of English. Some children may already know many English words, while others may be beginners. Teaching all children in exactly the same way may not be helpful.

KENwala2

Strategy

The teacher should use different activities according to children's needs. Children who need more help can be given simple words, pictures, and short sentences. Children who are more confident can be given additional reading, writing, and speaking tasks. Pairing a confident learner with a learner who needs support can also be useful.

WhatsApp_7055667037

5. Pronunciation Problems

Children may pronounce English words according to the sound patterns of their home language. Some English sounds may not exist in their first language. This can make English pronunciation difficult.

Strategy

The teacher should not expect perfect pronunciation at the beginning. Children can be given regular practice through rhymes, songs, poems, listening activities, and simple speaking exercises. The teacher can model the correct pronunciation and allow children to repeat it naturally.

KENwala2

6. Difficulty in Reading and Writing

Some children may understand spoken English but have difficulty reading and writing it. They may find spelling, sentence formation, and new vocabulary difficult.

Strategy

Reading should begin with simple and interesting material. Picture books, short stories, labels, word cards, and simple sentences can be used. The teacher can read a short text aloud and then allow children to read it together. Writing can begin with words and short sentences before moving to paragraphs.

WhatsApp_7055667037

7. Lack of Teaching Resources

In some schools, teachers may have limited access to English books, audio material, digital resources, or other teaching aids. This can make English teaching more difficult.

Strategy

Teachers can use low-cost and easily available materials. Pictures from newspapers, flashcards, classroom objects, story cards, charts, and children's drawings can be used. Simple digital resources, audio recordings, and educational videos can also be used when available.

KENwala2

8. Cultural and Social Differences

Children from different communities may have different experiences, traditions, food habits, festivals, and ways of living. If classroom examples are limited to one culture, some children may feel that their own experiences are not important.

Strategy

The teacher should use examples from different Indian cultures and regions. Children can be encouraged to share stories, festivals, local words, songs, and experiences from their own communities. This makes the classroom more inclusive and also creates opportunities for language learning.

WhatsApp_7055667037

9. Role of the Teacher

The teacher has an important role in making a multilingual classroom successful. The teacher should understand that every child learns a language at a different speed. Comparing children with each other can reduce their confidence.

The teacher should act as a guide and create opportunities for children to learn from one another. Group activities, pair work, storytelling, role play, games, discussions, and projects can make English learning active and enjoyable.

KENwala2

Conclusion

Learning English in a multilingual Indian classroom has many challenges, such as different language backgrounds, fear of mistakes, limited exposure to English, different learning levels, pronunciation problems, reading and writing difficulties, and limited resources. However, these challenges can be addressed through suitable teaching methods.

The teacher should respect children's home languages and use them as a support for learning English. A friendly classroom environment, regular speaking practice, stories, songs, games, group work, pictures, and simple reading and writing activities can make learning easier.

WhatsApp_7055667037

A multilingual classroom should not be seen as a problem. It is an opportunity to learn about different languages, cultures, and experiences. With patience, respect, and proper teaching strategies, every child can develop confidence and gradually become a successful English language learner.

KENwala2

WhatsApp_7055667037

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
National Institute of Open Schooling
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)
(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course No. 5

Pedagogy of Mathematics

पाठ्यक्रम संख्या 5 – गणित का शिक्षाशास्त्र

KENwala

Course : 5

WhatsApp_7055667037

1. Critically anaylyse the present NCERT / state board Mathematics textbook and present a written report.
Aspects of analysis should include language, illustrations, content organisation, inclusion, stereotypes, assessment etc.

वर्तमान NCERT / राज्य बोर्ड की गणित की पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए और एक लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत कीजिए।
विश्लेषण के पहलुओं में भाषा, चित्रण, विषय-वस्तु का संगठन, समावेशन, रूढ़ियाँ, आकलन आदि शामिल होने चाहिए।

KENwala2

2. Prepare any two teaching learning resources in mathematics along with instructional manual explain the objectives, scope and steps in using the resource.

गणित में कोई भी दो शिक्षण-अधिगम संसाधन तैयार कीजिए तथा उनके साथ निर्देशात्मक मैनुअल देते हुए संसाधन के उपयोग के उद्देश्यों, दायरे और चरणों को समझाइए।

WhatsApp_7055667037

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
National Institute of Open Schooling
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)
(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course No. 6

Pedagogy of The World Around Us

पाठ्यक्रम संख्या 6 – हमारे आसपास की दुनिया का शिक्षाशास्त्र

KENwal2

Course : 6

WhatsApp 7055667037

1. Write a report on the curricular and pedagogic recommendations of NCF-SE 2023 and NCFFS 2022 for The World Around Us at preparatory stage.

प्रारंभिक स्तर पर The World Around Us के लिए NCF-SE 2023 और NCFFS 2022 की पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय सिफारिशों पर एक रिपोर्ट लिखिए।

KENwala2

2. Write a detailed report on how you have used Jaadui Pitara /e-Jaadui Pitara/ ICT resource to teach a concept in 'the world around us' and link with the learning outcomes.

'The World Around Us' में किसी अवधारणा को सिखाने के लिए आपने Jaadui Pitara / e-Jaadui Pitara/ ICT संसाधन का किस प्रकार उपयोग किया हैं, इस पर एक विस्तृत रिपोर्ट लिखिए और इसे सीखने के प्रतिफलों से जोड़िए।